पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/24-26 प्रकाशित 16.04.2026 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु **खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया,** घन्टाघर, दिल्ली– 110007, **आई. एफ. एस. कोड** SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. **9810117464** पर एस.एम.एस कर दें या **9868051444** पर googlepay कर दें।

–अनिल आर्य

वर्ष-42 अंक-22 बैशाख-2083 दयानन्दाब्द 202 16 अप्रैल से 30 अप्रैल 2026 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 16.04.2026, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

नोएडा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा

महर्षि दयानंद के नाम पर हो—यह नामकरण नहीं, राष्ट्रीय कर्तव्य है

– आचार्य ज्ञान प्रकाश वैदिक

भारत केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि महान आदर्शों, तप, त्याग और बलिदान की जीवंत परंपरा का राष्ट्र है। इस राष्ट्र के निर्माण में अनेक महापुरुषों ने अपने विचारों, संघर्षों और बलिदानों से अमिट योगदान दिया है। ऐसे ही एक युगपुरुष थे स्वामी दयानंद सरस्वती, जिनकी 200वीं जन्म जयंती के उपरांत भी हम उनके योगदान के अनुरूप राष्ट्रीय सम्मान सुनिश्चित नहीं कर पाए हैंकृयह हमारे सामूहिक विवेक पर प्रश्नचिह्न है। आज जब नोएडा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा (जेवर एयरपोर्ट) विश्वस्तरीय पहचान प्राप्त करने जा रहा है, तब यह उचित और आवश्यक प्रतीत होता है कि इस ऐतिहासिक परियोजना को एक ऐसे महापुरुष के नाम से जोड़ा जाए, जिसने भारत के आत्मबोध को पुनर्जीवित किया। महर्षि दयानंद केवल एक संत नहीं थे; वे सामाजिक क्रांति के प्रणेता, वैदिक पुनर्जागरण के अग्रदूत और राष्ट्रीय चेतना के प्रेरक स्तंभ थे।

उन्होंने उस समय समाज में व्याप्त अंधविश्वास, आडंबर, छुआछूत, बाल विवाह और सती प्रथा जैसी कुप्रथाओं के विरुद्ध निर्भीक आवाज उठाई, जब इन विषयों पर बोलना भी साहस का कार्य था। उनका संदेश "वेदों की ओर लौटो" केवल धार्मिक आग्रह नहीं, बल्कि एक वैज्ञानिक, तर्कसंगत और मानवतावादी जीवन–दृष्टि का उद्घोष था। यह भी ऐतिहासिक सत्य है कि महर्षि दयानंद के विचारों से प्रेरित होकर अनेक स्वतंत्रता सेनानियोंकृजैसे लाला लाजपत राय, भगत सिंह, राम प्रसाद बिस्मिल और चंद्रशेखर आजादकृने राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व अर्पित किया। इस दृष्टि से महर्षि दयानंद केवल एक धार्मिक नेता नहीं, बल्कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के वैचारिक आधार–स्तंभ थे।

दुर्भाग्य यह है कि स्वतंत्रता के दशकों बाद भी हम उन महापुरुषों को वह स्थान नहीं दे सके, जिसके वे अधिकारी थे। स्मारकों, संस्थानों और राष्ट्रीय परियोजनाओं के नामकरण में यदि हम अपने वास्तविक नायकों को स्थान नहीं देंगे, तो आने वाली पीढ़ियाँ उनके योगदान से कैसे परिचित होंगी?

उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ तथा देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से यह अपेक्षा करना अनुचित नहीं कि वे इस विषय की गंभीरता को समझें। प्रधानमंत्री मोदी स्वयं महर्षि दयानंद की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष को वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित कर चुके हैं। अब समय है कि इस विचार को एक स्थायी राष्ट्रीय प्रतीक में परिवर्तित किया जाए। नोएडा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा केवल एक यातायात केंद्र नहीं, बल्कि भारत की उभरती वैश्विक पहचान का प्रतीक बनने जा रहा है। यदि इसका नाम "महर्षि दयानंद अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा" रखा जाता है, तो यह न केवल एक महापुरुष के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी, बल्कि विश्व समुदाय को भारत के वैचारिक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण से भी परिचित कराएगा। यह नामकरण किसी एक विचारधारा का नहीं, बल्कि राष्ट्र की आत्मा का सम्मान होगा। यह उन मूल्योंकृसत्य, समानता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और राष्ट्रभक्तिकृका सम्मान होगा, जिनकी स्थापना महर्षि दयानंद ने अपने जीवन से की। अंततः, यह केवल एक

(शेष पृष्ठ 4 पर)

>>

10 अप्रैल – स्थापना दिवस – महर्षि दयानंद एवं आर्य समाज

भारत में एक समय वह भी था, जब लोग कर्मकाण्ड को ही हिन्दू धर्म का पर्याय मानने लगे थे। वे धर्म के सही अर्थ से दूर हट गये थे। इसका लाभ उठाकर मिशनरी संस्थाएँ हिन्दुओं के धर्मान्तरण में सक्रिय हो गयीं। भारत पर अनाधिकृत कब्जा किये अंग्रेज उन्हें पूरा सहयोग दे रहे थे। यह देखकर स्वामी दयानन्द सरस्वती ने 10 अप्रैल, 1875 (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, नव संवत्सर) के शुभ अवसर पर मुम्बई में 'आर्य समाज' की स्थापना की। आर्य समाज ने धर्मान्तरण की गति को रोककर परावर्तन की लहर चलायी। इसके साथ उसने आजादी के लिए जो काम किया, वह इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा है। स्वामी दयानन्द का जन्म 12 फरवरी, 1824 को ग्राम टंकारा, काठियावाड़ (गुजरात) में हुआ था। उनके पिता श्री अम्बाशंकर की भगवान भोलेनाथ में बहुत आस्था थी। माता अमृताबाई भी धर्मप्रेमी विदुषी महिला थीं। दयानन्द जी का बचपन का नाम मूलशंकर था। 14 वर्ष की अवस्था में घटित एक घटना ने उनका जीवन बदल दिया। महाशिवरात्रि के पर्व पर सभी परिवारजन व्रत, उपवास, पूजा और रात्रि जागरण में लगे थे; पर रात के अन्तिम पहर में सब उनींदे हो गये। इसी समय मूलशंकर ने देखा कि एक चूहा भगवान शंकर की पिण्डी पर खेलते हुए प्रसाद खा रहा है। मूलशंकर के मन पर इस घटना से बड़ी चोट लगी। उसे लगा कि यह कैसा भगवान है, जो अपनी रक्षा भी नहीं कर सकता ? उन्होंने अपने पिता तथा अन्य परिचितों से इस बारे में पूछा; पर कोई उन्हें सन्तुष्ट नहीं कर सका। उन्होंने संकल्प किया कि वे असली शिव की खोज कर उसी की पूजा करेंगे। वे घर छोड़कर इस खोज में लग गये। नर्मदा के तट पर स्वामी पूर्णानन्द से संन्यास की दीक्षा लेकर वे दयानन्द सरस्वती बन गये। कई स्थानों पर भटकने के बाद मथुरा में उनकी भेंट प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द जी से हुई। उन्होंने दयानन्द जी के सब प्रश्नों के समाधानकारक उत्तर दिये। इस प्रकार लम्बी खोज के बाद उन्हें सच्चे गुरु की प्राप्ति हुई। स्वामी विरजानन्द के पास रहकर उन्होंने वेदों का गहन अध्ययन और फिर उनका भाष्य किया। गुरुजी ने गुरुदक्षिणा के रूप में उनसे यह वचन लिया कि वे वेदों का ज्ञान देश भर में फैलायेंगे। दयानन्द जी पूरी शक्ति से इसमें लग गये। प्रारम्भ में वे गुजराती और संस्कृत में प्रवचन देते थे; पर फिर उन्हें लगा कि भारत भर में अपनी बात फैलाने के लिए हिन्दी अपनानी होगी। उन्होंने अपना प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' भी हिन्दी में ही लिखा। 'आर्य समाज' के माध्यम से उन्होंने हिन्दू धर्म में व्याप्त पाखण्ड और अन्धविश्वासों का विरोध किया। इस बारे में जागरूकता लाने के लिए उन्होंने देश भर का भ्रमण किया। अनेक विद्वानों से उनका शास्त्रार्थ हुआ; पर उनके तर्कों के आगे कोई टिक नहीं पाता था। इससे 'आर्य समाज' विख्यात हो गया। स्वामी जी ने बालिका हत्या, बाल विवाह, छुआछूत जैसी कुरीतियों का प्रबल विरोध किया। वे नारी शिक्षा और विधवा विवाह के भी समर्थक थे। धीरे–धीरे आर्य समाज का विस्तार भारत के साथ ही अन्य अनेक देशों में भी हो गया। शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज द्वारा संचालित डी.ए.वी. विद्यालयों का बड़ा योगदान है। देश एवं हिन्दू धर्म के उत्थान के लिए जीवन समर्पित करने वाले स्वामी जी को जोधपुर में एक वेश्या के कहने पर जगन्नाथ नामक रसोइये ने दूध में विष दे दिया। इससे 30 अक्तूबर, 1883 (दीपावली) को उनका देहान्त हो गया।

आर्य समाज कबीर बस्ती में बैठक व आर्य समाज कीर्ति नगर का उत्सव सम्पन्न

रविवार 5 अप्रैल 2026,केन्द्रीय आर्य युवक परिषद की विशेष बैठक मुख्यालय आर्य समाज कबीर बस्ती पुरानी सब्ज़ी मंडी दिल्ली में सम्पन्न हुई। राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य के साथ प्रधान शिक्षक सौरभ गुप्ता, प्रदेश महामंत्री अरुण आर्य, रोहित कुमार, सुदेश भगत जी आदि। द्वितीय चित्र में आर्य समाज कीर्ति नगर दिल्ली के वार्षिकोत्सव एवं सभागार के उद्घाटन समारोह में समाज के मंत्री विनीत बहल व अनिल आर्य वैदिक विद्वान डॉ. वेद पाल जी यज्ञ के ब्रह्मा रहे।

आर्य समाज सेक्टर 33 नोएडा में सम्पर्क किया

रविवार 5 अप्रैल 2026, आगामी एमिटी शिविर के लिए सम्पर्क व निमंत्रण देने अनिल आर्य पहुंचे प्रधान मधु भसीन, बहिन गायत्री मीना, कैप्टन अशोक गुलाटी, राज सरदाना आदि ने पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

आर्य समाज अरुण विहार सेक्टर 29 नोएडा में उद्बोधन

रविवार 5 अप्रैल 2026, एमिटी शिविर के लिए निमंत्रण देने आर्य समाज अरुण विहार नोएडा पहुंचे प्रधान कर्ण सिंह खरब ने पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। अमर शहीद राजपाल को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

आर्य समाज मॉडल बस्ती दिल्ली का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

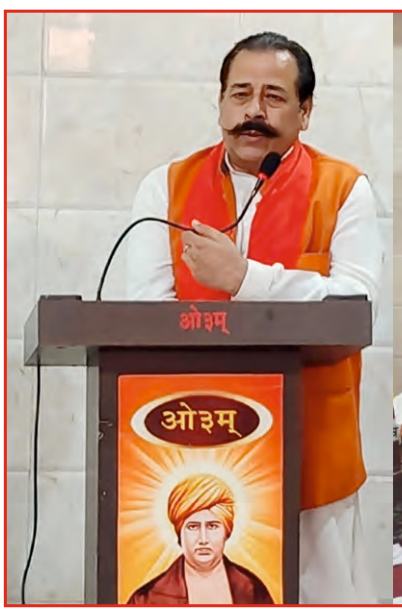

रविवार 5 अप्रैल 2026 आर्य समाज माडल बस्ती दिल्ली का वार्षिकोत्सव संपन्न हुआ। चित्र में अनिल आर्य संबोधित करते हुए डॉ जयेन्द्र आचार्य के प्रवचन हुए। दिनेश पथिक के भजनों ने समा बाँध दिया। अध्यक्षता कीर्ति शर्मा ने की वा संचालन मंत्री आदर्श आहूजा ने किया।। 'प्रधान आलोक शर्मा, वगीश शर्मा, वेद प्रकाश गोगिया, सुशील बाली, राजेश कुमार, जयप्रकाश शास्त्री, रमेश बेदी आदि उपस्थित थे।

युवा निर्माण से होगा राष्ट्र निर्माण ।। ओ३म् ।। हे कर्मशील मनुष्य तू कर्म कर

शिक्षाविद् डॉ. अमिता चौहान व डॉ. अशोक कु. चौहान के सानिध्य में

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का राष्ट्रीय शिविर

शनिवार 30 मई से शनिवार 6 जून 2026 तक

विशाल आर्य युवक चरित्र व व्यक्तित्व निर्माण शिविर

स्थान : ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल सैक्टर-44, नोएडा

उद्घाटन समारोह — रविवार 31 मई, प्रातः 11 बजे से 1 बजे तक

भव्य समापन समारोह — शनिवार 6 जून, प्रातः 11 से 1:00 बजे तक

नयी पीढ़ी को मातृ-पितृ भक्त, ईश्वर भक्त एवं देशभक्त बनाने का संकल्प

राष्ट्रीय भावना, अनुशासित जीवन, नैतिक शिक्षा तथा युवा पीढ़ी को महर्षि दयानन्द जी की विचारधारा से ओतप्रोत करने तथा शारीरिक व बौद्धिक रूप से सक्षम बनाने तथा उच्चकोटि के व्यायामाचार्यों द्वारा योगासन, ध्यान, प्राणायाम, दण्ड-बैठक, लाठी, जूडो-कराटे, बाक्सिंग, स्तूप आदि आत्मरक्षा सम्बन्धी शिक्षण के साथ-साथ वैदिक विद्वानों द्वारा सन्ध्या, यज्ञ, आर्य संस्कृति व वैदिक सिद्धान्तों पर चर्चा, भाषण कला, नेतृत्व कला व आत्मविश्वास के विकास हेतु शिविर का आयोजन।

आवश्यक नियम व निर्देश :- (1) इच्छुक नवयुवक 250 रू० प्रवेश शुल्क सहित प्रवेश पत्र भरकर **अंतिम तिथि** 15 मई 26 तक अपना स्थान सुरक्षित करवा लें। (2) सभी शिविरार्थी 30 मई को सायं 6 बजे तक शिविर स्थल पर रिपोर्ट करें (3) पूर्ण वेशभूषा-सफेद टी शर्ट, सफेद सैण्डो बनियान, सफेद निक्कर, सफेद जुराब, सफेद कपड़े के जूते, कान तक की लाठी, टार्च, सन्ध्या यज्ञ की पुस्तक, कापी, पैन, कुर्ता पायजामा व ऋतु अनुकूल बिस्तर भी साथ लायें। (4) आवश्यक बर्तन थाली, कटोरी, मग, गिलास आदि भी साथ लायें (5) आयु 12 वर्ष से 18 वर्ष तक के युवक शिविर में भाग ले सकते हैं। (6) अनुशासन व दैनिक दिनचर्या प्रातः 4 बजे से रात्री 10 बजे तक का पालन करना अनिवार्य होगा। (7) परिषद् की ओर से भोजन व आवास प्रबन्ध निःशुल्क रहेगा।

बौद्धिक : सर्वश्री डॉ. जयेन्द्र आचार्य,रविदेव गुप्ता,यशपाल शास्त्री,गवेन्द्र शास्त्री, विमलेश बंसल, श्रुति सेतिया, पिंकी आर्या

शिक्षक गण: रितम आर्य, मोहित आर्य, जय आर्य, निखिल आर्य, अजय आर्य, रोहित कुमार, मोहित आर्य (अलीगढ़)

प्रबन्धकगण : प्रि. रेणू सिंह,मोहित कपूर,प्रताप सिंह,ममता-यज्ञवीर चौहान,कै. अशोक गुलाटी,कमल आर्य,गौरव झा,देवेन्द्र गुप्ता, संतोष शास्त्री,विरेश आर्य,अजेन्द्र शास्त्री, विवेक अग्निहोत्री, त्रिलोक आर्य, प्रकाशवीर शास्त्री, दिनेश आर्य

दानी महानुभावों की सेवा में अपील

आप जानते ही हैं कि इस विशाल रचनात्मक आयोजन में नौ दिन तक तीन समय के प्रातः राश तथा भोजन प्रबन्ध पर हजारों रूपये व्यय हो जाता है जो कि आपके स्नेह व सहयोग से ही पूरा होना है। अतः आपसे अनुरोध है कि राष्ट्र निर्माण के इस यज्ञ को सफल बनाने के लिए आप अपनी ओर से, अपनी आर्य समाज या मित्रों की ओर से अधिक से अधिक सहयोग करवाने की कृपा करें। कृपया समस्त क्रास चैक/ड्राफ्ट **''केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, दिल्ली''** के नाम से भिजवाने की कृपा करें। आप ऋषि लंगर के लिए आटा, दाल, चावल, शुद्ध घी, रिफाइण्ड, मसाले, पाउडर दूध, सब्जी, दलिया के रूप में भी सामान भिजवाकर सहयोग कर सकते हैं। हमें पूरा विश्वास है कि आप अपनी ओर से तथा अपने इष्ट मित्रों से भी अधिक से अधिक सहायता राशि भिजवाने की कृपा करेंगे ।

स्वागत समिति : सर्वश्री राजीव कुमार परम, आर.पी. सूरी, यशोवीर आर्य, जितेन्द्र डावर, कपिल कुमार राय, राजकुमार भाटिया विधायक,राजू कोहली, पुनीत कोहली, जितेन्द्र नरूला, मायाप्रकाश त्यागी, डॉ. आर.के. आर्य, देवेन्द्र सैनी, रामकृष्ण तनेजा, ओम सपरा, अर्चना पुष्करना, ऋचा गुप्ता, के.एल. पुरी, अरूण बंसल, विनोद त्यागी, पूजा सलूजा, अजय पथिक, देवेन्द्र आर्य बन्धु, के.के. यादव, अविनाश बंसल, विरेन्द्र महाजन, बृजेश गुप्ता, अशोक सरदाना, प्रेम सचदेवा, के.एल. वर्मा, प्रवीन तायल, प्रदीप गोयल, अनिल मित्रा, राजेन्द्र वर्मा, डॉ. गंगा शरण आर्य, रवि चड्डा, ओ.पी. पांडेय, सुरेन्द्र शास्त्री, सुरेन्द्र गुप्ता, कै. रूद्र सैन सिंधु, ममता शर्मा, कृष्णा पाहुजा, अमरसिंह सहरावत, कौशल्या रानी, आदर्श सलूजा, डा. गजराज सिंह आर्य, विमला ग्रोवर, संजीव महाजन, संगीता गौतम, रमा-यशपाल, चावला, डॉ. रचना चावला, विद्योतमा झा, प्रो. करूणा चांदना, सुनीता बुग्गा, राकेश चोपड़ा, संजीव सिक्का, नरेन्द्र आर्य सुमन, रमेश छाबड़ा, अशोक जेठी, अजय मक्कड़, डालेश त्यागी, विनीता चावला, अंजू जावा, आदर्श आहूजा, विरेन्द्र आहुजा, डिम्पल भंडारी, सीमा ढींगरा, यशपाल आर्य, इन्द्रजीत महाजन, सहदेव नांगिया, कुसम भंडारी, चन्द्रमोहन कपूर, प्रि. अंजु महरोत्रा, हर्षदेव शर्मा, अशोक गुप्ता, स्वदेश शर्मा, राजेश मेहन्दीरत्ता, सुरेश आर्य, सुशीला गम्भीर, देवेन्द्र आनन्द, उर्मिल-महेन्द्र मनचन्दा, बलदेव गुप्ता, सी.ए. हंसराज चुघ, मधु सिंह, रजनी गर्ग, राधा-दशरथ भारद्वाज, डॉ. विपिन खेड़ा, पुनीता चौधरी, मंजुला कुकरेजा, महेन्द्र जेटली, संतोष वधवा, अमरनाथ बत्रा, विजय कपूर, सुशील बाली, अतुल सहगल, राधाकांत शास्त्री, मानवेंद्र शास्त्री, राजेश सपरा, राजेश मेंहदीरता, सुशील आर्य, के.एल. राणा, सोमगिरी गोस्वामी, देवदत आर्य

निवेदक

अनिल आर्य राष्ट्रीय अध्यक्ष	**आनन्द चौहान** शिविर संरक्षक	**प्रवीन आर्य/सुरेश आर्य** राष्ट्रीय मंत्री	ठाकुर विक्रम सिंह मधु भसीन गायत्री मीना अरुण अग्रवाल आनन्द प्रकाश आर्य विकास गोगिया वेदप्रकाश आर्य स्वागताध्यक्ष	अजय चौहान योगराज अरोड़ा मे.जन. आर.के.एस. भाटिया कर्नल कर्ण खर्ब कर्नल संजय खरबंदा रामलुभाया महाजन डॉ. डी.के. गर्ग स्वागताध्यक्ष
महेन्द्र भाई राष्ट्रीय महामंत्री	**दुर्गेश व रामकुमार आर्य** राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	**देवेन्द्र भगत** राष्ट्रीय मंत्री		
धर्मपाल आर्य राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	**अरूण आर्य,** शिविर प्रबन्धक	**सौरभ गुप्ता** राष्ट्रीय संगठन मंत्री		

कार्यालयः आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, फोन : 9810117464, 9013137070, 9818530543, 9971467978
YouTube aryayuvakparishad Email: aryayoughn@gmail.com
join - http://www.facebook.com/group/aryayouth • aryayouthgroup@yahoogroups.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा 2020 से 776वां वेबिनार सम्पन्न

ईश्वर स्तुति विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

ईश्वर के गुणों को जीवन में धारण करने से कल्याण सम्भव –रजनी गर्ग

सोमवार 6 अप्रैल 2026,केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में ईश्वर स्तुति विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह कोरोना काल से 776 वाँ वेबिनार था। आर्य नेत्री रजनी गर्ग ने कहा कि जब हम ईश्वर की स्तुति करते हैं तो ईश्वर के गुणों का समावेश होता है,उन्हें अपने जीवन में धारण करना चाहिए तभी मानव कल्याण सम्भव होगा। वैदिक प्रवक्ता सुधीर कुमार बंसल ने विषय पर प्रकाश डालते हुए बताया कि ईश्वर–स्तुति है तो दो शब्दों का समन्वय पर वैदिक विधा की जान है।प्रत्येक आर्य–जन ऋषि दयानन्द चयनित यजुर्वेद के 8 मन्त्र जिन्हें ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपसना के शीर्षक से जाना जाता है, यज्ञ प्रारम्भ करने से पूर्व अर्थ और पद्य सहित एकाग्रता से उच्चारित करते हैं। इनमें पहला ही मन्त्र अपने आप में श्रेष्ठतम महत्वपूर्ण है, इसमें प्रार्थना की गई है कि हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्त्ता प्रभु! हमारे सम्पूर्ण दुर्गुणों, दुर्व्यसनों और दुःख–कष्टों को दूर कीजिए और सद्‌गुणों के साथ हमारा कल्याणकारी मार्ग प्रशस्त करिये। इसी क्रम में अथर्ववेद के एक मन्त्र यो भूतं च भव्यं च सर्वयश्चाधितिष्ठति को उद्धरित करते हुए ईश्वर को भूत, भविष्य और वर्तमान के स्वामी से आख्यातित किया है जिसका सुख ही केवल–मात्र स्वरूप है। ईश्वर में दुःख लेशमात्र व अंशमात्र भी नहीं। परमात्मा में सर्वकर्मों के फल अर्पित करके निष्काम भाव से कर्म करना ही सही ईश्वर–प्रणिधान है इससे चित्त के संस्कार–समूह का नाश हो जाता है। असंख्य जीवों के असंख्य कर्म–संस्कार चित्त में जमा रहते हैं और इसी कारण विभिन्न शरीरों में आबद्ध होकर सुख और दुःखों के भोगों को मनुष्य भोगता है। जिस शक्ति से हम लोग शुभ कार्य करते हैं, उसी शक्ति से अशुभ कार्य भी जाने–अनजाने करते हैं। इन अशुभ कार्यों के संस्कार विनष्ट करने के लिए ही क्रिया–योग, ईश्वर–स्तुति और उपासना का आचरण जीवन में प्रतिदिन अपनाना चाहिए जो जीवन को शुद्ध–परिशुद्ध करे! ईशस्तुति द्वारा सांसारिक बंधन से चित्त मुक्त होकर मनुष्य परमात्मा की ओर धावित होता है। आर्य– समाज के दस नियमों में से दूसरा नियम ईश्वर स्तुति के लिए श्रेष्ठतम माध्यम ऋषि ने 150 वर्ष हुए, आर्य–समाज की स्थापना के साथ रचित किया था। ईश्वर को सच्चिदानन्द स्वरूप व्याख्यातित करने के अलावा और अन्य 19 विशेषणों से उसका गुणगान किया गया है। जिस ईश्वर की हम उपासना करते हैं वह निराकार, सर्वशक्तिमान, अज़र–अमर और सृष्टिकर्त्ता आदि गुणों से आप्लावित है, इसलिए भी उसकी नित्य, प्रतिदिन भोर–बेला में स्तुति अभीष्ट है। इस सृष्टि की अति बुद्धिमत्ता पूर्वक रचना ही इसके रचयिता को सिद्ध करती है।इस ब्रह्मांड पर विश्वास ही ईश्वर नामक उस परम शक्ति के अस्तित्व का सबसे बड़ा साक्ष्य है। कार्यक्रम की अध्यक्ष राजश्री यादव ने भी ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना के 8 मन्त्रों का स्वरचित श्रेष्ठ कवित्त प्रस्तुत किया जिसे सुनकर ज़ूम पर सभी आर्य श्रोता मंत्रमुग्ध हो गये। कार्यक्रम का कुशल संचालन परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने किया। गायक एवम् गायिकाओं में रविन्द्र गुप्ता जी, के डी अरोड़ा, प्रवीणा ठक्कर, प्रतिभा कटारिया, कुसुम भण्डारी, संतोष धर, शोभा बत्रा एवम् कमला हंस जी आदि ने विषय–अनुरूप मधुर गीत प्रस्तुत किये।अंत में श्रीमती कुसुम भण्डारी जी ने मण्च संयोजक अनिल आर्य के निर्देशानुसार शान्ति–पाठ और जयघोष के साथ सभा का समापन किया।

>>>

(पृष्ठ 1 का शेष)

नाम बदलने का प्रस्ताव नहीं हैकृयह इतिहास के प्रति हमारा दायित्व है, राष्ट्र के प्रति हमारी कृतज्ञता है और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का एक अमर स्रोत स्थापित करने का अवसर है। यदि हम आज भी अपने महानायकों को वह स्थान नहीं देंगे, तो इतिहास हमें क्षमा नहीं करेगा। अतः यह समय हैकृनिर्णायक, साहसिक और न्यायपूर्ण निर्णय का। "महर्षि दयानंद अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा" यही होना चाहिए भारत के गौरव का अगला अध्याय।

जहां होता है भरपूर काम और प्रभु का गुणगान
आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद जम्मू कश्मीर के तत्वावधान में

विशाल आर्य युवा चरित्र निर्माण शिविर

रविवार 7 जून से रविवार 14 जून 2026 तक
स्थान: आर्य समाज जानी पुर कॉलोनी जम्मू
इच्छुक युवक सम्पर्क करे– 7051094311

सुभाष बब्बर	कपिल बब्बर	अमित महाजन
प्रान्तीय अध्यक्ष	संयोजक	महामन्त्री

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद की मांग
जेवर हवाई अड्डे का नाम
महर्षि दयानन्द के नाम पर किया जाए

अनिल आर्य	महेन्द्र भाई
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महासचिव

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**, 2199/63,नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 **मो.** : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970